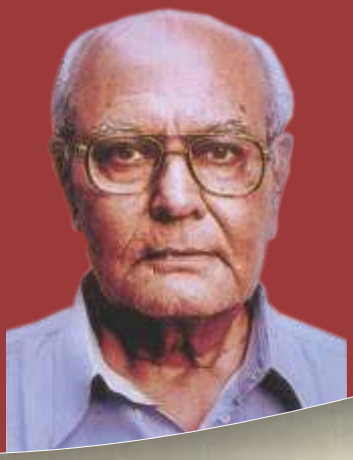

SHRI JYOTI MANSHANKER BHATT

Shri Jyoti Manshanker Bhatt is an artist living and working in Vadodara. An artist of great significance, he has, through his art practice of painting, printmaking and photography contributed immensely to the discourse of post-colonial cultural practices that are of historical value to our nation. Shri Jyoti Bhatt is also acknowledged for his contribution in popularizing printmaking in India. His extensive photo-documentation of traditional floor graphics and wall paintings made mainly by Indian women is considered invaluable, and are now in the collection of IGNCA New Delhi, and in the Museum of Art & Photography in Bangalore. His writings on art (Gujarati, English and Hindi) have articulated and shaped contemporary ideas for over four decades. He taught painting at the Maharaja Sayajirao University of Baroda for thirty-three years (1959 -1992), and under his tutelage has groomed many generations of contemporary Indian artists.

2. Born on March 12, 1934 at Bhavnagar, Gujarat, Shri Bhatt is the son of Shri Manshanker Bhatt who was a freedom fighter and social reformer. His primary schooling was at Dakshinamurti and 'Ghar shala'. There after he joined the Faculty of Fine arts at Vadodara in 1950 in the first batch of painting students, and completed his post-graduate diploma in 1956 under the guidance of Prof. N.S.Bendre, Prof. Sankho Chaudhuri and Prof. K.G.Subramanyan. Shri Jyoti Bhatt studied Fresco painting at Banasthali Vidyapith in 1953 and has executed several murals including two major projects for The Parliament House lobby in New Delhi (1955-59).

3. Shri Bhatt was amongst the young artists who formed the vanguard 'Baroda Group' whose legacy has been instrumental in phrasing a figurative narrative tradition in modern Indian art, and was part of various seminal exhibitions at Mumbai between 1956 and 1959. He was a founder member of 'GROUP 1890'. The Group's first exhibition in 1963 was presented at the Lalit Kala Akademi in New Delhi and inaugurated by the then Prime Minister Pt. Jawaharlal Nehru. His curiosity for learning has continuously made him an innovative artist whose experimentations have yielded new approaches of technical process and methodology.

4. In 1967, Shri Bhatt along with a friend, developed an etching press in Baroda which is now exported abroad also. Through 1967 to 1994, he made photography a recognized independent art form in India. He is amongst the first artists to engage with digital technology as an art form. He has held multiple solo exhibitions and has participated in many group shows in India and abroad. Three Monographs on his works are published, and one compilation of his articles is also published.

5. Shri Bhatt was awarded the NATIONAL award and the PRESIDENT'S GOLD PLAQUE at the Second National Exhibition of Arts in 1956 while he was a student at Vadodara. He was awarded a CULTURAL SCHOLARSHIP (1957-59) by the Government of India. He was also awarded scholarships for further study by the Italian Government (1961-62), and was conferred the Fulbright scholarship (1964-65) by the US Government and J.D.R III grant (1965-66). He is the recipient of three International and numerous National awards for his paintings, prints and photography. His works are in major public collections including the Museum of Modern Arts & the Smithsonian Museum (USA), the Uffizi Gallery (Italy), the British Museum & the TATE Modern (UK). His works are also at the National Gallery of Modern Art (New Delhi), Bharat Bhavan (Bhopal), the Patna Museum (Bihar) and in private art collections in India and abroad. He has been honoured with five LIFETIME ACHIEVEMENT AWARDS, including one by the Gujarat State Government in 2003; and an honorary doctorate by the Rabindra Bharti University in 2005.

पद्म श्री

श्री ज्योति मानशंकर भट्ट

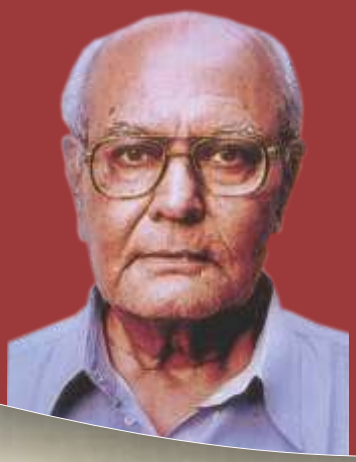

श्री ज्योति मानशंकर भट्ट एक कलाकार हैं जो वडोदरा में रहते हैं और वहीं काम करते हैं। आपने एक महान कलाकार के रूप में पेंटिंग, प्रिंटमेकिंग और फोटोग्राफी के अपने कलागत कार्य के माध्यम से उत्तर-औपनिवेशिक सांस्कृतिक परंपराओं में बहुत योगदान दिया है जिनका हमारे देश के लिए ऐतिहासिक महत्व है। आपको भारत में प्रिंटमेकिंग को लोकप्रिय बनाने में किए गये आपके योगदान के लिए भी सराहा जाता है। मुख्य रूप से भारतीय महिलाओं द्वारा बनाए गए पारंपरिक फ़्लोर ग्राफिक्स और वॉल पेंटिंग्स के आपके वृहत फोटो-प्रलेखन को अमूल्य माना जाता है और अब वे आईजीएनसीए नई दिल्ली में और बैंगलोर के कला और फोटोग्राफी के संग्रहालय में संग्रहीत हैं। कला पर आपके लेख (गुजराती, अंग्रेजी और हिंदी) ने चार दशकों से समकालीन विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है और निरूपित किया है। आपने तैंतीस वर्षों (1959 -1992) के लिए बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय में चित्रकला विषय को पढ़ाया और उनके संरक्षण में समकालीन भारतीय कलाकारों की कई पीढ़ियां तैयार हुई हैं।

2. 12 मार्च, 1934 को भावनगर, गुजरात में जन्मे, श्री भट्ट, श्री मानशंकर भट्ट के पुत्र हैं, जो एक स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक थे। उनकी प्राथमिक शिक्षा दक्षिणामूर्ति और 'घर शाला' में हुई थी। उसके बाद उन्होंने 1950 में वडोदरा के ललित कला संकाय में चित्रकला के विद्यार्थियों के पहले बैच में प्रवेश किया और प्रो.एन.एस. बेंद्रे, प्रो. संखो चौधरी और प्रो.के.जी. सुब्रमण्यन के मार्गदर्शन में 1956 में अपना स्नातकोत्तर डिप्लोमा पूरा किया। श्री ज्योति भट्ट ने 1953 में बनस्थली विद्यापीठ में फ्रेस्को पेंटिंग का अध्ययन किया और नई दिल्ली में संसद भवन लॉबी (1955-59) के लिए दो प्रमुख परियोजनाओं सहित कई भित्ति चित्रों को प्रदर्शित किया।

3. आप उन युवा कलाकारों में से थे, जिन्होंने अग्रणी समूह 'बड़ौदा समूह' का गठन किया था, जिसकी विरासत आधुनिक भारतीय कला में एक अलंकारिक वर्णनात्मक परंपरा को फिर से जीवंत करने में सहायक रही है और 1956 और 1959 के बीच मुंबई में विभिन्न विशिष्ट प्रदर्शनियों का हिस्सा रही हैं। वह 'ग्रुप 1890' के एक संस्थापक सदस्य थे। 1963 में समूह की पहली प्रदर्शनी नई दिल्ली में ललित कला अकादमी में प्रस्तुत की गई थी और तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा इसका उद्घाटन किया गया था। आपकी सीखने की जिज्ञासा ने आपको एक ऐसा अभिनव कलाकार बना दिया है, जिनके प्रयोगों से तकनीकी प्रक्रिया और कार्यप्रणाली के नए दृष्टिकोण सामने आए हैं।

4. 1967 में, आपने एक दोस्त के साथ, बड़ौदा में एक एचिंग प्रेस विकसित किया जो अब विदेशों में भी निर्यात किया जाता है। 1967 से 1994 तक, उन्होंने फोटोग्राफी को भारत में एक मान्यता प्राप्त स्वतंत्र कला का रूप दिया। वह कला के रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी से जुड़ने वाले शुरूआती कलाकारों में शामिल हैं। उन्होंने कई एकल प्रदर्शनियों का आयोजन किया है और भारत और विदेशों में कई समूह कार्यक्रमों में भाग लिया है। उनकी रचनाओं पर तीन मोनोग्राफ प्रकाशित हुए हैं, और उनके लेखों का एक संकलन भी प्रकाशित हुआ है।

5. जब आप वडोदरा में छात्र थे तो आपको 1956 में द्वितीय राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में राष्ट्रीय पुरस्कार और वर्तमान में प्रेजीडेंट्स गोल्ड प्लेक पुरस्कार पदक से सम्मानित किया गया। आपको भारत सरकार द्वारा एक सांस्कृतिक छात्रवृत्ति (1957-59) प्रदान की गई। आपको इतालवी सरकार (1961-62) द्वारा आगे के अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई थी और अमेरिकी सरकार और जेडीआर-III अनुदान (1965-66) द्वारा फुलब्राइट छात्रवृत्ति (1964-65) प्रदान की गई थी। आप अपने चित्रों, प्रिंट और फोटोग्राफी के लिए तीन अंतर्राष्ट्रीय और कई राष्ट्रीय पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता हैं। आपके काम प्रमुख सार्वजनिक संग्रहालयों में हैं जिनमें आधुनिक कला संग्रहालय और स्मिथसोनियन संग्रहालय (यूएसए), उफीजी गैलरी (इटली), ब्रिटिश संग्रहालय और टेट मॉडर्न (यूके) शामिल हैं। आपकी कृतियां नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट (नई दिल्ली), भारत भवन (भोपाल), पटना संग्रहालय (बिहार) और भारत और विदेशों के निजी कला संग्रहालयों में भी हैं। आपको पांच लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है; जिनमें से एक वर्ष 2003 में गुजरात राज्य सरकार द्वारा प्रदान किया गया है और रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2005 में आपको डॉक्टरेट की मानद उपाधि से भी सम्मानित किया गया है।